मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2019 marumegh
ISSN:2456-2904

आम के बागवानी के लिए मासिक योजना

रजनी राजन[1], आभा कुमारी[1], कुलदीप पाण्डेय[2] एवं विकास कुमार[3]

[1]उद्यान विभाग (फल एवं फल प्रौद्योगिकी), बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, बिहार

[2]आई. सी. ऐ. आर.– भारतीय कृषि अनुशांधन संस्थान, नई दिल्ली

[3]उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय (केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय) पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश

परिचय

आम उगाने की लाभप्रदता मुख्य रूप से समय पर बाग के मासिक प्रबन्धन की प्रक्रिया पर निर्भर करती है। यह लेख आवश्यक कृषि कार्यों को समय पर करने, बागों के प्रभावी प्रबंधन और गुणवत्ता वाले फलों की अधिक पैदावार करने में मदद करेगा। आम के बागों में विभिन्न कार्य जैसे नर्सरी तैयार करना, पौधे लगाना, उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई, निराई गुड़ाई, रोग एवं तुड़ाई उपरांत प्रबंधन आदि किये जाते हैं। यदि यह सभी क्रियाएं वैज्ञानिक विधि से और सही समय पर किया जाये तो बागों से अधिकतम उत्पादन एवं लाभ मिल सकता है। किसी एक गतिविधि में देरी, उत्पादकों को भारी नुकसान पहुंचाती है और अंततः उद्यम को लाभहीन बनाता है। इस लेख के अन्तर्गत दी गयी सिफारिशों को अपनाने से निश्चित रूप से आम के बागों से अधिकतम उत्पादन, गुणवत्ता में वृद्धि एवं लाभ सुनिश्चत कर सकते हैं।

जनवरी

- अच्छे परागण और फलन हेतु, आम के बागों में बौर आने के समय मधुमक्खी के बक्से की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- नवोदित पौधों को ठंढ से बचाना चाहिए।
- पाउडी मिल्ड्यू/खर्रा रोगों और लीफ हॉपर पर नियंत्रण के लिए घुलनशील सल्फर (80 डब्लू.पी.) 3 ग्राम और फॉस्फोमिडोन 2 मि.ली./ली. का छिड़काव करना चाहिए।
- मिज कीट से रोकथाम हेतु डाइमेथोएट 30 ई.सी. (0.6 मि.ली./ली.) या मिथाइल डेमेटोन 25 ई.सी. (0.5 मि.ली./ली.) या थायोक्साम 25 ई.सी. (0.4 मि.ली./ली.) का छिड़काव करना चाहिए।
- गुजिया कीट के प्रबंधन के लिए, दिसम्बर माह मे लगायी गयी एल्काथेन पट्टी को सफाई उपरांत पुनर्व्यवस्थित किया जाता है।
- इस महीने में बौर को गुम्मा रोग से बचने के लिए पहले से निकली हुई पुष्पकलिकाओं को तोड़ देना चाहिए।

फरवरी

- आम के हॉपर या भुंगा कीट को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशक जैसे कि डाईमिथोएट (0.5 मि.ली./ली.), क्लोरोपायरीफॉस (0.4 मि.ली./ली.) या थायोक्सैम (0.4 मि.ली./ली.) का छिड़काव करना चाहिए।
- बार–बार एकल रसायन के उपयोग करने से बचना चाहिए। फूलों के दौरान कीटनाशक के छिडकाव नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे परागण की प्रक्रिया प्रभावित होती है।
- दीमक और किसी भी फुफूंद रोगों के लगातार प्रकोप से बचने के लिए बोर्डो पेस्ट को तने पर 30 से 45 से.मी. की ऊंचाई तक लगाना चाहिए।

मार्च

- उर्वरकों का इस्तेमाल पौधे से 6'' की परिधि मे करने के उपरान्त गड्ढो की सिंचाई करना चाहिए।
- खर्रा रोग को नियंत्रित करने के लिए डिनोकैप (1 मि.ली./ली.) का छिडकाव किया जाना चाहिए।
- पुष्पगुच्छ पर दीखाई देने वाले एन्थ्रेक्नोज रोग को नियंत्रित करने के लिए, कार्बेन्डाजिम (2 ग्रा./ली.), एवं पत्तियां और टहनियाँ पर लक्षण दिखाई देंने वाले एन्थ्रेक्नोज रोगों के नियंत्रण के लिए कॉपरऑक्सीक्लोराइड (3 ग्रा./ली.) के छिडकाव की सलाह दी जाती है।

अप्रैल

- नए पौधों के रोपण के लिए – 3×3×3 फीट के गड्ढे की खुदाई करके मिट्टी की उपयुक्तता सुनिश्चित करें एवं गड्ढे भरने के दौरान किसी भी कैल्शियमयुक्त नोड्यूल या शीटरॉक वाले मिट्टी का उपयोग नही करना चाहिए।
- जल भराव और काली मिट्टी मे पौध रोपण नही करना चाहिए।
- पौध रोपण हेतु उपयुक्त भूमि से मिट्टी की प्रत्येक फीट गहराई से मिट्टी का नमूना एकत्रित करना चाहिए। मृदा परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर यदि मृदा पीएच मान 7.0–8.0 है तो इसे उपयुक्त माना जाता है। आम के बागन के लिए पीएच मान 6.0 से नीचे और 8.5 से ऊपर से नही होना चाहिए।
- मिट्टी एवं सिंचित पानी का ई.सी. मान 1 डे.सी.एम. एवं ई. ए.स.पी. मान 15 प्रतिशत से अधिक नही होना चाहिए ।
- इस महीने के दौरान फलों का गिरना बहुत आम समस्या है। इस समस्या के प्रबंधन के लिए जब फल मटर के दाने के आकार होते हैं तब नेफथलीन एसिटिक एसिड (एन.ए.ए) (20 पीपीएम– यानी 2 ग्रा./100 ली. पानी) का छिडकाव करना चाहिए।
- आम मे मंजरी आने के समय (मार्बल चरण), सूक्ष्म पोषक तत्वों के मिश्रण जिंक, कॉपर, मैंगनीज, आयरन, बोरोन आदि (2 मि.ली./ली.) के 2–3 छिड़काव 10–12 दिनों के अंतराल पर करना चाहिए ।
- यह महीना फलों की वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ग्रीष्मकाल आम तौर पर पौधों का सूखने वाला महीनों होता है और पानी की कमी कि वजह से फलों की गुणवत्ता कम हो सकता है। इसलिए, जब फल मटर आकार प्राप्त करते हैं तो सिंचाई शुरू की जाती है और 10–15 दिनों के अंतराल पर जारी रखना चाहिए।
- आम के बगीचों मे भुनका कीट या मैंगो हॉपर के प्रबन्धन के लिए क्लोरपायरीफॉस (1 मि.ली./ली. पानी) या डाइमिथोएट (0.5 मि.ली./ली.) का छिड़काव करना चाहिए ।
- फलमक्खी आम के गंभीर कीटों में से एक है जिसके फलों के गूदा खाने से फल खराब हो जाता है। इसके नियन्त्रण के लिए फ्रूट फ्लाई ट्रैप (मिथाइलयूजिनोल, 0.1 प्रतिशत एवं मैलाथियान 0.1 प्रतिशत) उपयोग किया जा सकता है।
- आम के फल, शिरा रोग / ब्लैक टिप एवं आंतरिक परिगलन जैसे विकारों से प्रभावित होते हैं। यह समस्या मुख्यरूपेण उन क्षेत्रों में होती है जहाँ आम के फल के विकास के दौरान ईंटभट्टों का संचालन होता है। इसलिए अप्रैल के अंतिम सप्ताह मे इसे बोरेक्स (1 प्रतिशत या 1 किग्रा / 100 लीटर पानी) के छिडकाव से नियंत्रित किया जा सकता है।
- तना छेदक / शूटबोरर एवं पत्ती काटने वाला कीट / लीफ हॉपर का आतंक इस महीने मे ज्यादा होता है। इन कीड़ों को कार्बेरिल (0.2 प्रतिशत) या मोनोक्रोटोफॉस (0.05 प्रतिशत) के छिडकाव से नियंत्रित किया जा सकता है।

मई

- गड्ढे खोदना – गड्ढे खोदते समय बरती जाने वाली सावधानिया निम्न है : जिसमें खोदी हुई ऊपरी मिट्टी (1) फीट गड्ढे के दाईं ओर और निचली मिट्टी (1) फीट गड्ढे के बाईं ओर डालने चाहिए। मिट्टी से पैदा होने वाले कीट और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए गड्ढों को भरने से पहले इसे सूरज कि रौशनी मे कम से कम दो सप्ताह के लिए खुला रखना चाहिए।
- शिरा रोग / ब्लैक टिप और आंतरिक परिगलन से बचाव के लिए इस महीने में बोरेक्स (1 प्रतिशत) का छिड़काव जारी रखना चाहिए।
- इस महीने के दौरान बैक्टीरियल कैंकर का प्रकोप भी होता है। इससे बचने के लिए स्ट्रेप्टोमाइसिन (200 पीपीएम या 20 ग्राम / 100 लीटर पानी) का छिडकाव करना चाहिए।

जून

- नए रोपण के लिए गड्ढे भरना – 50 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर के साथ 1 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट, 1 किग्रा नीम केक और 100 ग्राम ऊपरी मिट्टी के साथ गड्ढों को भरना चाहिए तथा साथ मे 10 प्रतिशत प्रति गड्ढे फॉलिडॉल पाउडर डालना भी जरुरी है।
- जून महीने में, फ्रूट फ्लाई ट्रैप मे उपयोग होने वाले रासायनिक पदार्थों (मिथाइल यूजिनोल, 0.1 प्रतिशत एवं मैलाथियोन, 0.1 प्रतिशत) को बदलते रहना चाहिए।
- आम की किस्में जो जून के दौरान परिपक्व होती हैं, फलों की तुराई 10 मि.मी. टहनियों के साथ सुबह या शाम के समय की जानी चाहिए। बौनी किस्मों में स्रावकों एवं बड़े पौधों मे आम के हारवेस्टर का तुराई के लिए उपयोग करना चाहिए।
- फलों मे तुराई दौरान हुई छति से बचने के लिए फलों को तुरंत डीपिंग ट्रीटमेंट अर्थात् डंठल से सैप को हटा देना चाहिए।
- फल की तुराई के तुरंत बाद, इसे पहले छायादार जगह पर इकट्ठा करना चाहिए ताकि फल से बाग की ऊष्मा निकल सके और भंडारण से पूर्व फलों को धोकर अच्छी तरह सूखा लेना चाहिए।

जुलाई

- देर से पकने वाली आम की किस्मों की तुराई की जाती है।
- तुराई उपरांत फलों को प्लास्टिक के बक्से में रखा जाता है और पैकेजिंग शेड तक सावधानी से पहुँचाया जाता है। पैकेजिंग शेड में उचित श्रेणीकरण की जाती है। क्षतिग्रस्त, कटे, सड़े हुए आम को हटा दिया जाता है।
- एक समान पकने के लिए, आम के फलों को एथ्रॉल के घोल (700 पी.पी.एम.) में 5 मिनट के लिए गुनगुने पानी (52 डिग्री सेल्सियस) में डुबोया जाता है। इसके साथ ही कार्बेन्डाजिम (0.5 ग्रा./ली.) का प्रयोग करने से फलो को फफूंद जनित रोगों से बचाया जा सकता है।
- फलों की तुराई के बाद 500 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फास्फोरस और 500 ग्राम पोटेशियम प्रयोग करना चाहिए।
- उर्वरकों के डालने से पहले, खरपतवार को हाथ से या फिर रासायनिक विधि का उपयोग कर के हटाया जा सकता है।

अगस्त

- तना छेदक कीट तराई क्षेत्रों में एक समस्या है। यह महीना इस कीट के नियंत्रण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, महीने के मध्य में मोनोक्रोटोफॉस (0.05 प्रतिशत) या डाइमेथोएट (0.06 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- इस महीने मे जाल बनाने वाले कीड़े टेंट क्टेर्पिल्लर का प्रभाव भी बहुत अधिक होता है इसकी रोकथाम के क्रम मे सबसे पहले जाल साफ करके प्रभावित भाग को काटकर हटा देना चाहिए और अधिक प्रकोप होने पर 0.2 प्रतिशत कार्बेरिल (4 ग्रा./ली.) या 0.04 प्रतिशत मोनोक्रोटोफोस (1 मि.ली.) का छिडकाव करना चाहिए।
- रेड रस्ट और एन्थ्रेक्नोज के नियंत्रण के लिए कॉपरऑक्सीक्लोराइड (0.3 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

सितंबर

- यदि दीमक के प्रभाव पौधे के मूलवृन्त मे देखा जाता है तो उसी दौरान क्लोरोपायरीफॉस (टर्मेक्स– सी) 5 मि.ली./ली. की दर से छिड़काव करें। उपरोक्त रसायन को रिंग बेसिन में भी डालना चाहिए।
- सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने पर– मल्टीप्लेक्स 5 ग्रा./ली. की दर से छिड़काव करें।
- पत्ती में अगर गॉल दिखे तो – प्रभावित पत्तियों को हटा दें या फिर 1.5 मि.ली. फॉस्फोमिडॉन का छिडकाव करें।
- यदि पेड़ पर शूट गॉल मेकर का संक्रमण देखा जाए तो मोनोक्रोटोफोस (0.05 प्रतिशत) या डाइमेथोएट (0. 06 प्रतिशत) का दोहरा छिडकाव करें।

अक्टूबर

- यदि जून–जुलाई के दौरान अंतरासस्यन सफल नही हो पाता है तो इस महीने के दौरान अंतर फसलों को लगाया जा सकता हैं।
- गैप फिलिंग– पौधों की मरने या किसी वजह से अन्तर आने पर गैप फिलिंग किया जा सकता है।
- उच्च वर्षा वाले क्षेत्र मे रोपण अक्टूबर में किया जा सकता है।
- नाइट्रोजन (500 ग्रा.), फास्फोरस (250 ग्रा.) और पोटेशियम (500 ग्रा.) और 50 कि. ग्रा. अच्छी तरह से सड़े हुए गोबर के खाद (एफ. वाई. एम.) की शेष मात्रा मिला देना चाहिए।
- अक्टूबर के पहले पखवाड़े मे फूलों के कली के दौरान, फूल की विकृत संरचना की घटना को कम करने के लिए नेपेथीलीन एसीटिक एसिड (200 पी.पी.एम.) का छिडकाव करना चाहिए।
- आम के पेड़ों में फूलों के नियमन के लिए पेक्लोबुट्राजोल (4–5 मि.ली./ मीटर) का इस्तेमाल किया जाता है।

नवंबर

- मूलवृन्त के बगल से निकलने वाले तनो को हटा दें।
- इस महीने के दौरान डाई–बैक का लक्षण एक आम समस्या हैं। इसकी रोकथाम के लिए 5–10 से.मी. तक सूखी टहनियों की छंटाई और 15 दिनों में दो बार कॉपरऑक्सीक्लोराइड (0.3 प्रतिशत) का छिडकाव करना चहिये।
- यदि गमोसिस के लक्षण दिखाई देते हैं, तो सतह को साफ करें और प्रभावित हिस्से पर बोर्डो पेस्ट लगाएं।

दिसंबर

- आम तौर नए रोपित पौधो पर नए अंकुर के साथ फूल दिखाई देते हैं। इस दशा मे फूलों की कलियों को हटा दिया जाना चाहिए, अन्यथा फूल पौधों की वृद्धि में बाधा डालते हैं।
- महीने के अंत तक गुजिया कीट के नियंत्रण के लिए ट्री बैंडिंग की व्यवस्था करनी चाहिए। जिसमे तने पर भूमि से 40 से.मी. की ऊँचाई तक मिट्टी का लेप लगा देना चाहिए, फिर 25 से.मी. चौड़ाई की पॉलिथीन जिसकी मोटाई 400 गेज हो, लपेट कर पट्टी के नीचे की तरफ चारों ओर ग्रीस लगा देनी चाहिए, जिससे गुजिया कीट ऊपर ना पहुँच पाए। गुजिया कीट के नियंत्रण के लिए, कार्बोसल्फान (0.1 प्रतिशत या 100 मि.ली./100 लीटर पानी) या पौध के चारो तरफ क्लोरपायरीफॉस (250 ग्रा./पेड़) का छिडकाव करे।
- गुम्मा बौर के रोकथाम हेतु समय से पूर्व निकल चुकी बौर को तोड़ देना चाहिए।
- छाल खाने वाले तथा तना छेदक कीटो की पहचान करके सबसे पहले जाल को साफ करे, तथा मोनोक्रोटोफोस के घोल (0.05 प्रतिशत) को छेदों मे डालकर बंद कर देना चाहिए।
- पौधों को निम्न तापमान के प्रभाव से बचने के लिए कुछ दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।